वर्तमान समय में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता का मूल्यांकनः–

सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महिला महाविद्यालय, बवानी खेड़ा,
भिवानी।

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संक्षिप्त परिचय देते हुए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इसकी भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। शोध पत्र में यह बताने का प्रयास किया है कि वर्तमान समय में (उत्तर शीत युद्ध काल) गुटनिरपेक्ष आंदोलन की क्या प्रासंगिकता बची है। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन में गुटनिरपेक्ष आंदोलन क्या योगदान दे रहा है तथा भविष्य में क्या दिशा अपनानी चाहिए आदि मुददों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः गुटनिरपेक्ष आंदोलन, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, शीत युद्ध, महाशक्तियाँ, तीसरी दुनिया, विकासशील नवोदित राष्ट्र।

भूमिका– गुटनिरपेक्ष आंदोलन 1960 के दशक में विश्व राजनीति में उदित हुआ। इसने शीत युद्ध कालीन विश्व में नवस्वतंत्र, गरीब व विकासशील राष्ट्रों को सोवियत रूस व अमेरिकी जैसी महाशक्तियाँ की गुटबाजी का शिकार होने से बचाया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने तीसरी दुनिया के देशों को अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए एक मंच प्रदान किया।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है, शीत–युद्ध कालीन सैन्य संधियों व गुटबंदियों से तटस्थ रहने पर बल दिया। महाशक्तियों के गुटों में शामिल न होकर इसने शीत–युद्ध की तीव्रता को कम करने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत ने गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति की मुख्य आधारशिला स्वीकार किया तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन में सदैव इसका पालन किया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध तो समाप्त हो गया किंतु शीत युद्ध नामक प्रछन्न युद्ध ने पुनः विश्व को अनिश्चितकलीन युद्ध में धकेल दिया। ऐसे में रूस व अमेरिका के नेतृत्व में विश्व दो भागों में विभाजित हो गया।

अधिकांश राष्ट्रों ने या तो रूस या फिर अमेरिका के गुट में शामिल होना स्वीकार किया। किंतु नवस्वतंत्र तथा विकासशील राष्ट्रों को यह भय सताने लगा कि उन्हें फिर से रूस या अमेरिका जैसी महाशक्तियों की गुलामी को स्वीकार करना पडेगा। ऐसे में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू, मिस्त्र के नेता अब्दुल नासिर व युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो ने तीसरी दुनिया के देशों का नेतृत्व किया। इन तीनों के प्रयत्नों से 1–6 सितम्बर 1961 में युगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना की गयी। इसकी स्थापना के समय इसमें कुल 25 राष्ट्रों ने हिस्सा लिया। वर्तमान में 120 सदस्यों के साथ गुटनिरपेक्ष आंदोलन यू. एन. ओं के बाद विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक मंच है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का योगदानः– निःसंदेह गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना शीत युद्ध के दौरान गुटों की राजनीति से बचने हेतु की गयी थी। किंतु समय के साथ इस आंदोलन ने अपने उद्देश्यों को अधिक व्यापक बनाया है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने विश्व राजनीति में सकारात्मक योगदान दिया है।। इसे हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझेंगे।

1. साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद व नवउपनिवेशवाद का विरोध।
2. आत्मनिर्णय के सिद्धांत का समर्थन।
3. निःशस्त्रीकरण व शस्त्र नियंत्रण पर बल।
4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लोकतांत्रिकरण पर बल।
5. नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग को बढ़ावा दिया है।
6. रंगभेद व नस्लभेद की नीति का विरोध।
7. राष्ट्रों के मध्य शांतिपूर्ण सहअस्तित्व पर बल।
8. संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार हेतु आवाज उठाना (विशेषतयाः सुरक्षा परिषद की सदस्यता के संदर्भ में)
9. आतंकवाद के सभी रूपों की निंदा व विरोध।
10. अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान पर बल।

वर्तमान समय में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता–

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की शुरूआत शीत युद्ध के दौरान गुटों की राजनीति से पृथक रहने हेतु की गयी थी। 1991 में शीत–युद्ध का अंत हो गया इसलिए बहुत से राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अब गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अस्तित्व भी समाप्त हो गया है। किंतु गहनता से अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वर्तमान समय में

विश्व शांति, तीसरे विश्व के मुददे, पर्यावरणीय समस्याओं आतंकवाद एवं न्यायसंगत विश्वव्यवस्था की मांग जैसे मुददों को सुलझाने में गुटनिरपेक्षता आंदोलन कारगर साबित हो रहा है।

आज गुटनिरपेक्ष आंदोलन के मंच से विकासशील राष्ट्र महाशक्तियों के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। ये राष्ट्र गुटनिरपेक्षता के मंच से अपनी एकजुटता का परिचय देते हैं। आज संयुक्त राष्ट्र संघ के ढांचे में अनेक महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता है, जो गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के द्वारा जोर से उठाई जा रही है। अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान विश्व व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए गुटनिरपेक्ष आंदोलन का महत्व व प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ गयी है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. जौहरी, जे. सी. ''विश्व राजनीति के बदलते आयाम'' जालन्धर–2008.
2. पंत पुष्पेश और जैन, श्रीपाल, ''अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1996–2007.
3. यादव, आर. एस. '' भारत की विदेश नीतिः एक विश्लेषण'' किताब महल, इलाहाबाद, 2005
4. ओझा शीला, 'भारतीय विदेश नीति एक अध्ययन'' प्रिंट वैल पब्लिकेशन जयपुर, 2000.
5. कुमार महेन्द्र, ''अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष '' शिवलाल अग्रवाल एंव कंपनी आगरा, 1989.
6. भाम्बरी सी पी, ''फोरेन पॉलिसी ऑफ इण्डिया– स्टरलिंग बाम्बे, 1987.